राजा लंबोदर

एवं अन्य एकांकी

लक्ष्मीनारायण लाल

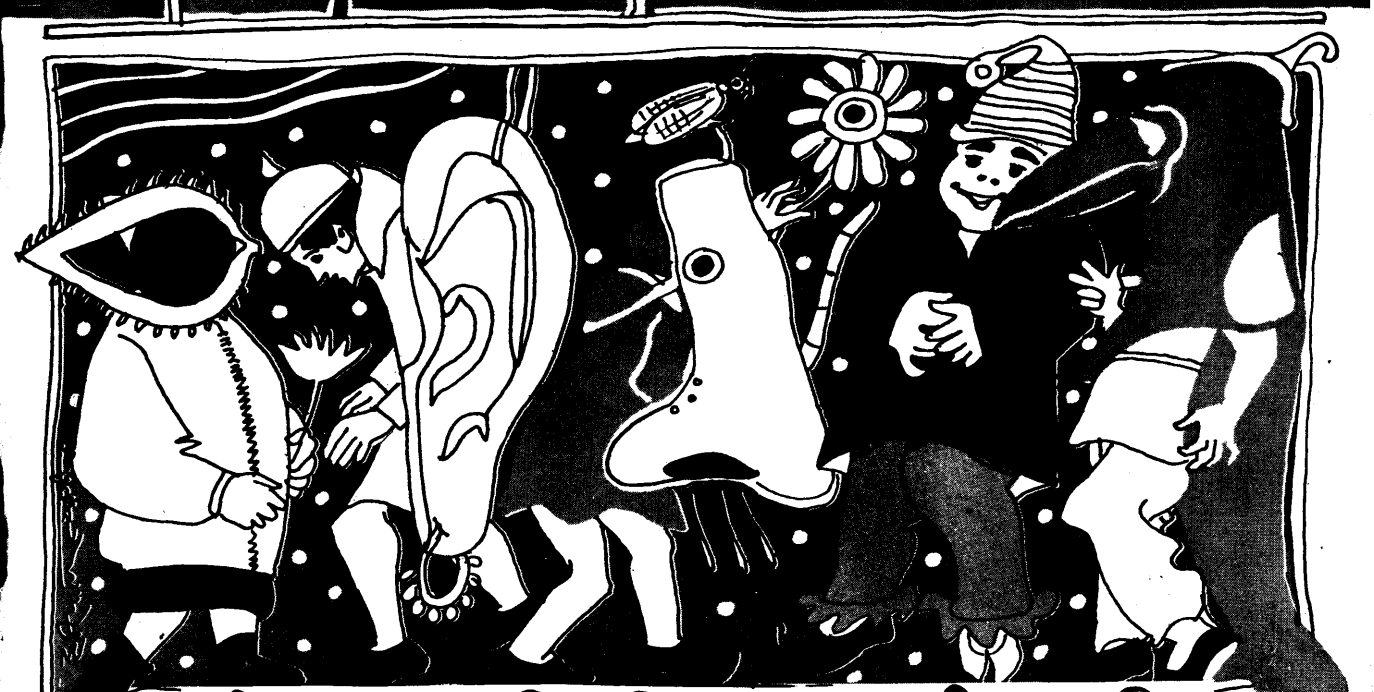

पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी प्रा० लि०

राजा लंबोदर एवं अन्य एकांकी

लेखक

लक्ष्मीनारायण लाल

पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी प्रा० लि०

888, ईस्ट पार्क रोड, करोल बाग

नई दिल्ली-110 005 (भारत)

प्रकाशकीय

डा० लक्ष्मीनारायण लाल हिन्दी के अत्यंत सफल और बहुचर्चित नाटककार के रूप में जाने जाते हैं, दर्जनों नाट्य पुस्तकों के रचयिता डा० लाल के नाटकों में तरह-तरह के प्रयोग विद्यमान हैं। उन्होंने हिन्दी नाटक की परम्परा को विकसित किया और स्थापित भी किया। 1960 के बाद हिन्दी नाट्य लेखन के क्षेत्र में जो नाटककार आए उनमें डा० लाल एक महत्वपूर्ण नाटककार के रूप में जाने गये।

कहा जाता है कि डा० लाल के नाटकों में वह जीवंतता है जो भारतेन्दु हरिश्चन्द्र में विद्यमान थी। 'अंधेर नगरी' की परम्परा के छोटे नाटक डा० लाल के लेखन की उपलब्धि रही है। हिन्दी में रोचक नाटकों के अभाव को डा० लाल ने पूरा किया जिसका अभाव हिन्दी नाटक के लिए कलंक माना जाता रहा है। बड़े नाटकों की जद्दोजहद के बीच उभरे डा० लाल के स्तरीय नाटक उनकी पीढ़ी के नाटककारों में अग्रणी स्थान रखते हैं। नाटक चाहे जैसे भी रहे हों, बड़े अथवा छोटे, डा० लाल ने नये से नये प्रयोग किये और चर्चा के केन्द्र में रहे। लोक नाट्य को जिन्दा रखने की लालसा ने डा० लाल को उस शिखर पर पहुँचाया जहाँ कम ही लोग पहुँचते हैं। "सगुनपंछी" इसका जीवंत उदाहरण है।

प्रस्तुत नाट्य-संकलन में मूल रूप से उन एकांकियों का संग्रह किया गया है जिनका सीधा सम्बंध बच्चों से है। परन्तु इन एकांकियों में व्यंग्य के माध्यम से समाज पर जो तीखे प्रहार किये गये हैं वह यह बताते हैं कि इन एकांकियों का सम्बंध बड़े बुजुर्गों से भी है। स्तरीय व्यंग्य और रोचक कथोपकथन इन एकांकियों की समग्रता है। बच्चों द्वारा मंचित किये जाने योग्य ये एकांकी पाठकों और नाट्य प्रेमियों के बीच विशेष चर्चित होंगे।

प्रकाशक

नवप्रकाशित कथा साहित्य

1-	लाल फूल	श्रीनिवास वत्स
2-	रात में पूजा	श्रीनिवास वत्स
3-	श्रुतसेन का परिचय	गौरव अग्रवाल
4-	तीन फूल	जयप्रकाश शर्मा
5-	बौनो का बंदी	प्रेमशरण शर्मा
6-	घुड़सवारी का चमत्कार	प्रवासी विनयकृष्ण
7-	अमर फल की तलाश	स्नेह अग्रवाल
8-	धर्मज्ञ तोते की कहानी	व्यथित हृदय

क्रम		पृष्ठ
1.	परीक्षा	1
2.	बिल्ली का खेल	15
3.	राजा लंबोदर	26

1. परीक्षा

पात्र : **राकेश, दिलीप, मास्टर, विनोद, रीटा, मंजु**

(एक चौकोर टेबुल के चारों ओर कुर्सियों पर पांचों परीक्षार्थी बैठे हैं। टेबुल के ऊपर बीचोबीच हवा में एक खंजर (लंबा चाकू) लटक रहा है। पर्दा उठते ही, या प्रकाश आते ही हम देखते हैं, राकेश और रीटा के पास ट्रांजिस्टर बज रहे हैं। विनोद और मंजु के सामने फिल्मी मैगजीन खुली है, दिलीप सिगरेट पी रहा है। और सभी परीक्षार्थी अपनी-अपनी कॉपियाँ लिख रहे हैं। मास्टर खड़ा हनुमान चालीसा पढ़ रहा है)–

जै हनुमान ज्ञान गुनसागर
जै कपीस तिहुंलोक उजागर
रामदूत अतुलित बलधामा
अजंनि पुत्र पवनसुत नामा

राकेश : अजी, धीरे-धीरे. . . देखते नहीं, हम रेडियो सीलोन सुन रहे हैं।

दिलीप : माट साहब, माचिस होगी ?

मास्टर : क्या ? भई तुमने अपने 'डिमांड' में माचिस की माँग नहीं की थी।

दिलीप : कैसे हो सकता है ? बिना माचिस के मैं सिगरेट कैसे दगा सकता हूँ ?

मास्टर : तुम तो 'चेन स्मोकर' हो, तुम्हारी सिगरेट बुझी कैसे ?

दिलीप : पेपर लिखने में लगा था। जाहिर है सिगरेट बुझ गई।

मास्टर : यह है तुम्हारा डिमांड कार्ड, इसमें तुम्हारे 'डिमांड्स' थेः नंबर एक–हमारे साथ गाइड्स और कुंजी होनी चाहिए। नम्बर दो–सिगरेट पीने की आजादी। नंबर तीन–नकल करने की पूरी छूट। नंबर चार–आपस में बातें करने, पूछने का अधिकार। नंबर पांच–बाहर टेलीफोन करने की आजादी। नंबर छह–सिगरेट, पान, चाय का अधिकार . . .

दिलीप : अच्छा तो आप इसमें माचिस की बात भी लिख लीजिए।

मास्टर : अब नहीं हो सकता।

विनोद : प्लीज़, कीप क्वायट। देखते नहीं कितना अच्छा गाना चल रहा ह. . .मेरा 'कंसन्ट्रेशन' टूट जाएगा।

रीटा :

मंजु :

मास्टर :

मंजु :

मास्टर :

मंजु :

मास्टर :

दिलीप

मंजु

रीटा

राकेश

मास्टर

दिलीप

विनोद

राकेश

रीटा

मंजु

मास्टर

मंजु

रीटा

रीटा : मुझे नकल करने में दिक्कत हो रही है।

मंजु : मास्टर साहब, 'राइट' की जरा 'स्पेलिंग' बताइए।

मास्टर : 'डिक्सनरी' रखी है, देख लीजिए।

मंजु : हमारे पास इतना वक्त नहीं है।

मास्टर : आपस में पूछ लेना !

मंजु : मास्टर साहब, प्लीज, जरा डिक्सनरी देखकर बता दीजिए न 'राइट' की स्पेलिंग !

मास्टर : कहाँ है तुम्हारा डिमांड कार्ड ! (*निकाल कर पढ़ता है–*) यह रहा तुम्हारा डिमांड कार्ड। नंबर एक–अंग्रेजी-हिन्दी की सब तरह की डिक्सनरियाँ, नम्बर दो–मेकअप करने की आजादी, नम्बर तीन–नकल करने की पूरी छूट, नम्बर चार–'ब्याय फ्रेंडस' को टेलीफोन करने का अधिकार. . .वगैरह वगैरह। इस में कहीं यह डिमांड नहीं है कि 'इनविजीलेटर' स्पेलिंग बताएँ।

दिलीप : क्यों शोर करते हो ? लिख लो, 'राइट' की स्पेलिंग है-आर. आई. टी. इ.।

मंजु : थैंक्यू. . .राइट।

रीटा : थैंक्यू को हिन्दी में क्या कहते हैं ?

राकेश : मास्टर साहब से पूछो ना !

मास्टर : यह कहीं डिमांड में नहीं है कि तुम्हें अंग्रेजी शब्दों का हिन्दी अनुवाद बताया जाए ! चलो, सावधानी से नकल करो।

दिलीप : प्लीज, माचिस. . .यह बहुत जरूरी है. . .वर्ना मैं पेपर नहीं दे पाऊँगा।

विनोद : यह लो, यार ! . . .मगर एक सिगरेट मुझे भी।

(दोनों सिगरेट दगाते हैं।)

राकेश : यार, अच्छा गाना चल रहा है।

रीटा : चुप रहो, मैं अपनी 'फेवरेट हिरोइन' पर निबंध लिख रही हूँ।

मंजु : मैं यह सवाल हरगिज नहीं कर सकती. . .मैंने डिमांड किया था, लड़ाकेयों का प्रश्नपत्र लड़कों के प्रश्नपत्र से अलग होना चाहिए. . .

मास्टर : यह कैसे हो सकता है !

मंजु : यह कैसे हो सकता है कि मेरी 'फेवरेट हिरोइन' हो, हमारा फेवरेट तो हीरो होगा।

रीटा : अरे. . .रे. . .रे. . .मैं तो राजेश खन्ना पर निबंध लिख रही हूँ।

मंजु : वह तो हीरो है।

रीटा : समझी नहीं तुम. . .लड़कियाँ हीरो पर लिखेंगी. . .और लड़के हिरोइन पर. . .

सभी : क्यों, मास्टर साहब ?

मास्टर : मैं कुछ नहीं जानता। समझ लो. . .और कान खोलकर सुन लो, मैं यहाँ इसलिए खड़ा हूँ, ताकि तुम सब को नकलें करने में कोई कठिनाई न हो। जो-जो तुम्हारे 'डिमांड्स' हैं वे पूरे होते रहें।

राकेश : नकल करने के अलावा हम लोग जितना कुछ अपने दिमाग से लिखें, उसे हर हालत में सही मानकर जांचा जाए।

विनोद : एग्जैक्टली।

दिलीप : बिलकुल !

रीटा : यह हम सब की माँग है !

मंजु : ऐ. . .सुन रहे हो कि नहीं ?

मास्टर : मैं सब सुन रहा हूँ. . .लिखते चलो लिखते, बेकार की बातों में वक्त मत बर्बाद करो. पूरे ढाई बज चुके हैं. . .ठीक तीन बजे वक्त खत्म हो जाएगा।

राकेश : कैसे ?

विनोद : हमने तीन घंटे के पेपर के लिए पाँच घंटे की डिमांड की है।

मास्टर : भाई, तीन बजे पूरे पाँच घंटे हो जाएँगे।

(फोन आता है)

मास्टर : हेलो. . .जी. . .जी हाँ, हैं. . .आपका फोन. . .

रीटा : *(फोन पर)* हाय. . .फाइन. . .कैसे हो ? अच्छा पेपर है, थोड़ा 'बोर' है. . .हाय 'इनविजीलेटर' ? बड़ा बोर है. . .हाँ-हाँ, माथे पर तिलक लगाये हैं. . .हाथ में हनुमान चालीसा लिए हैं. . नहीं-नहीं, तुम्हारे आने की कोई जरूरत नहीं है। यह कोई खास बदमाशी नहीं कर रहा है। अच्छा, बाई, पिक्चर हॉल के बाहर मेरा इंतजार करना. . .हेलो-हेलो. . .'थैंक्यू' का हिन्दी अनुवाद क्या है. . .स्वागत. . .अच्छा. . .थैंक्यू. . .बाई. . . *(फोन रखती है और अपने बैग से थोड़ा मेकअप देखती है)*

रीटा : हमारी माँग का क्या हुआ ?

मास्टर : मैं नयी माँगो के बारे में कुछ नहीं जानता. . .प्रिंसिपल के पास जाओ !

राकेश : आप जाइए. . .और प्रिंसिपल को बताइए कि हमारी माँग है कि हम लोग जो कुछ भी

मास्टर
राकेश
मास्टर
मंजु
मास्टर
सभी
मास्टर
राकेश
विनोद
दिलीप
विनोद
दिलीप
विनोद
राकेश
रीटा
राकेश
मंजु

अपने मन से लिखें, उसे हर हालत में सही मानकर जाँचा जाए।

मास्टर : देखूँ. . .क्या लिखा है अपने मन से ?

राकेश : मैं तो अभी नकल कर रहा हूँ।

मास्टर : किसी ने कुछ लिखा है अपने मन से ?

मंजु : मैंने लिखा है। यह देखिए ?

मास्टर : *(पढ़ता है)* प्रश्न है 'महात्मा बुद्ध की जीवनी पर प्रकाश डालो' और आप लिखती हैं– "महात्मा बुद्ध का जन्म बंबई में 'जुहूबीच' पर हुआ था। बचपन से उनके मन में वैराग्य होने के नाते वह अकसर अकेले 'मेरिन ड्राइव' पर घूमते पाए जाते थे और जब उदास हो जाते थे तो पिक्चर देखने चल पड़ते थे। एक बार 'सेकंड शो' देखकर पैदल घर लौट रहे थे, तो रास्ते में उन्हें एक बूढ़ा मिला। उन्होंने उससे पुछा, 'तुम इतने बूढ़े क्यों हो ?' उसी समय उन्हें एक गीत सुनायी पड़ा 'मैं क्या करूं राम मुझे बुड्ढा मिल गया'. . ." यही लिखा है तुमने अपने मन से ? और इसे सही मानकर जांचा जाए?

सभी : विद्यार्थी एकता जिन्दाबाद !

मास्टर : आर्डर. . .आर्डर. . .बैठिए. . .बैठिए. . .मैं प्रिंसिपल के पास जाता हूँ। *(प्रस्थान)*

राकेश : डर गया न ?

विनोद : डरता नहीं तो. . .बाहर निकलते ही उसे उस तरह मारता, जैसे 'मेरे अपने' फिल्म में शत्रुघ्न सिन्हा को राजेश खन्ना ने मारा धू. . .धू. . .धुआ. . .धू !

दिलीप : यार, चुप भी रहो. . .नकल करने में दिक्कत हो रही है !

विनोद : यार, इस साल पास होना चाहते हो क्या ?

दिलीप : यार, तीन साल हो गए एक क्लास में !

विनोद : तो क्या हो गया, मेरा भी तो तीसरा साल है !

(फोन आता है)

राकेश : *(फोन पर)* हलो. . .मास्टर साहब की धर्मपत्नी ! नमस्ते जी. . .जी हाँ, वह खैरियत से हैं. अब तक उन पर कोई हमला नहीं हुआ है. . .जी. . .नमस्ते. . .जी, बता दूँगा। *(फोन रखता है)* मास्टरनी जी बहुत घबरायी हुई हैं।

रीटा : उस गाने की दूसरी लाइन क्या है ?. . .'आप यहाँ आए किसलिए ?'

राकेश : 'आपने बुलाया इसलिए'. . . *(गाने लगते हैं।)*

मंजु : 'आए हैं तो काम भी बताइए !'

विनोद : 'पहले जरा आप मुसकराइए !'

रीटा : 'मुसकराने की न कोई बात है।'

राकेश : 'देखिए तो क्या हसीन बात है।'

सभी : 'अजी काम तो बताइये। बताइए। पहले जरा आप मुसकराइये !'

(गाने का शोर मच जाता है। मास्टर दौड़ा आता है।)

मास्टर : आर्डर. . .आर्डर ! बैठिये. . .टेक योर सीट्स।

(सब बैठ जाते हैं।)

मास्टर : यह किस फिल्म का गाना है ?

सभी : 'कल, आज और कल'।

मास्टर : अभी चल रही है ?

रीटा : चली भी गयी !

मास्टर : अच्छी फिल्म रही होगी !

मंजु : अजी, डब्बू ने क्या फ्रस्टक्लास एक्टिंग की !

विनोद : बबीता ने क्या रोल किया है. . .वाह !

(मास्टर हँसने लगता है। सब उसकी नकल करते हैं।)

मास्टर : शांत. . .शांत !

राकेश : अजी, हमारे 'डिमांड' का क्या हुआ ?

मास्टर : प्रिंसिपल साहब ने कहा है, आप मन से कम-से-कम लिखिए, ज्यादातर नकल ही कीजिए। जो परीक्षार्थी जितना अधिक नकल करके लिखेगा, उसे उतने ही अधिक नम्बर दिए जाएँगे।

(परीक्षार्थी नकल करने में लग गए हैं। फोन आता है)

मास्टर : *(फोन पर)* हेलो. . .लीजिए आपका फोन !

विनोद : *(फोन पर)* हेलो रीटा. . .फाइन. . .जरूर. . .वंडरफुल ! हाँ-हाँ, हमारी सारी माँगें पूरी हुई हैं. . .और तुम्हारे यहाँ ? . . .क्या ? अपने इनविजीलेटर को जरा फोन तो देना. . .हेलो. इनविजीलेटर साहब, तुम्हारी शादी हुई है या नहीं ? और इन्श्योरेंस ? मुझे अफसोस है. . . आई वार्न यू ! हॉल के बाहर निकलिए तो पता चलेगा. . .क्या ? अच्छा जी. . . ! *(फोन रखकर)* कमाल है. . .कहता है 'कोई परवाह नहीं !'

मास्टर : हमारी एकता जिन्दाबाद ! दुनिया के इनविजीलेटर्स एक हो जाओ।

राकेश : शट अप !

मास्टर : यू. . .यू. . .शट अप. . .शट अप ! (*सन्नाटा*)

मास्टर : प्यारे मित्रो, अपना काम करो. . .मुझसे झगड़ने में तुम्हें क्या मिलेगा ? मैं यहाँ तुम्हीं लोगों की मदद के लिए खड़ा हूँ। ईश्वर करे तुम सब पास हो जाओ। तुम्हीं इस देश की आशा हो. . .तुम्हीं लोग भविष्य हो. . .मेरे होनहार प्यारे दोस्तो. . . !

दिलीप : क्या कहा ? क्या कहा ? जरा फिर से बोलिए. . .इसे मैं यहाँ फिट कर दूँ. . .मतलब मैंने अब तक कुछ भी नहीं लिखा।

मास्टर : क्यों, नकल भी नहीं कर सकते ?

दिलीप : अगली बार मैं 'सॉल्वड पेपर्स' के लिए 'डिमांड' करूँगा।

मास्टर : (*कॉपी उठाकर देखता है।*) कोरी है. . .कोरी है. . .दिल की किताब कोरी है ! *(गाना)*

दिलीप : दिल की किताब कोरी है। *(गाना)*

मंजु : *(गाना)* कोरी है. . .कोरी ही रहने दो !

(फोन की घंटी।)

मास्टर : हेलो. . .ओह, तुम हो, लल्लू की अम्मा ! . . .हाँ-हाँ, यहाँ सब कुशल-मंगल है। हाँ, अभी तक तो जीवित हूँ. . .ना ना ना, ऐसा क्यों करती हो। चिता बनाने की क्या जरूरत है लल्लू की अम्मा, हनुमानजी सदा सहाय, सदा सहाय. . .मैं मरूँगा नहीं. . .हाय, तुम विधवा होने की बात क्यों करती हो ? सुन तो, एक ओर तुम कहती हो कि चिता लगाकर मेरी लाश के साथ सती हो जाओगी और दूसरी ओर कहती हो कि विधवा हो जाओगी। यह मैं क्या सुन रहा हूँ ! ये बातें मैं हर्गिज नहीं बर्दाश्त कर सकता। मैं इस समय अपने जीवन की सब से बड़ी और कड़ी परीक्षा से गुजर रहा हूँ। तुम्हें मेरा साथ देना चाहिए. . .यस. हाँ. . .हाँ. . .ढाई रूपये का प्रसाद बोल दो. . .तुम मेरी जीवन-रक्षा के लिए शिव तांडव का मंत्र जाप करती रहो. . .हाँ-हाँ, वह लाल धागा और ताबीज मैं बाँधे हूँ. . .बस, चिंता मत करो, लल्लू की माँ। अलविदा ! *(फोन रखकर)* अलविदा. . .अलविदा—क्यों कहाँ?

राकेश : *(सहसा गा उठता है)* आओ ना. तड़पाओ ना ओ मेरी ओ मेरी शर्मीली

मास्टर : आर्डर. . .आर्डर. . .वक्त खत्म हो रहा है. . .

सभी : आर्डर. . .आर्डर. . .!

मास्टर : धन्यवाद ! समझ गये ना. . .'थैंक्यू' का हिन्दी अनुवाद है धन्यवाद, स्वागत नहीं।

रीटा : 'नॉन्सेन्स'! जो मेरा बॉय फ्रेंड बताएगा, मैं वही लिखूँगी।

मंजु : इन टीचरों की जनरेशन रट-रटकर पास हुई है।

मास्टर : और यह जनरेशन नकल करके भी न पास होगी।

राकेश : हमें तुम्हारे ये झूठे इम्तहान नहीं चाहिए।

विनोद : हमें बिना परीक्षा के पास किया जाए।

दिलीप : हमें तुम्हारी दो कौड़ी की डिग्रियाँ नहीं चाहिए !

रीटा : जो हम से टकराएगा. . .

सभी : चूर-चूर हो जाएगा !

(इस बीच परीक्षार्थियों ने मास्टर को खदेड़ लिया है। मास्टर टेबुल के चारों ओर भागता फिर रहा है. . .टेबुल के नीचे छिपा है . . . भागा है और ऊपर हवा में लटकता हुआ छुरा तेजी से हिलने लगा है।)

मास्टर : *(हाथ जोड़कर छुरे से प्रार्थना)*

ओम जै जगदीश हरे
ओम छुरा भाई
तू मत हिला करे . . .
ओम जै जगदीश हरे !
ओम मेरा जी डरा करे
भाई तू मत हिला करे
जै जगदीश हरे।

(फोन की घंटी)

मास्टर : *(फोन पर)* जी, सर ! . . .जी हाँ, प्रिंसिपल साहब, सब ठीक-ठाक ढंग से नकल कर रहे हैं। यस, सर ! . . मेरे यहाँ किसी प्रकार की गड़बड़ी नहीं है। शोर . . शोर . . मेरे यहाँ? नहीं तो . . जी, बिल्कुल नहीं। जी सर ! . . नहीं, मुझे 'फर्स्ट एड' की ज़रूरत नहीं है. . . हाँ, जी, अभी पहली बार 'अटैक' किया था मुझ पर, पर मुझे ज़रा भी चोट नहीं आयी। जी, मेरा ब्लडप्रेशर ठीक है . . . नाड़ी भी ठीक चल रही है . . दिल भी करीब-करीब ठीक है . . जी, पुलिस का इंतजाम जरूर-जरूर रखिएगा . . . थैंक्यू, सर ! *(फोन रखता है।)* प्यारे बच्चों, तुम लोग जरूर-जरूर इस साल इम्तहान में पास होकर हमारा विद्यालय छोड़ दो। तुम लोग ठाठ से नकल करो। हमने तुम्हारी और अपनी हिफाजत के लिए पुलिस, फायर ब्रिगेड, एम्बुलेंस को बुला रखा है। यकीन न हो तो बाहर देख लो !

राकेश
विनोद
मास्टर
दिलीप
मास्टर
राकेश
विनोद
मास्टर
दिलीप
मास्टर
मास्टर
राकेश
विनोद
दिलीप
मंजु
राकेश
रीटा
विनोद

राकेश : चुप रहो !

विनोद : बेमतलब चकर-चकर करता है।

मास्टर : हैय, ठीक से बात करो !

दिलीप : तुम्हारी यह हिम्मत ?

मास्टर : तुम्हारी यह हिम्मत !

राकेश : निकालें छुरी ?

विनोद : *(निकालता है।)*यह देखो !

मास्टर : *(उससे बड़ी निकालता है।)*यह देखो. . . और यह न भूलो कि तुम लोग मेरे ही विद्यार्थी हो !

दिलीप : इसे चलाना भी जानते हो ?

मास्टर : अरे, तुम लोग बम्बई की ही फिल्में देखते हो, मैं अंगरेजी फिल्में देखता हूँ। बी० ए० में 'हैमलेट' नाटक पढ़ाता हूँ। वाह-वाह. . . वह तलवार का दृश्य . . . !

(तभी फोन आता है।)

मास्टर : क्या? . . ओह, लल्लू की माँ . . . क्यों इतनी चिंता करती हो ? क्या ? क्या ? इंश्योरेंस दफतर से चिट्ठी आ गयी . . क्या लिखा है। . . . हाँ हाँ . . .क्या ? हमारा इंश्योरेंस खत्म? यह कैसे हो सकता है ? हो गया . . . मतलब ?

राकेश : मतलब जैसे लड़ाई के दिनों में एअरफोर्स के पायलेट्स के इंश्योरेंस नहीं होते . . उसी तरह परीक्षा के दिनों में अध्यापकों के भी इंश्योरेंस नहीं होते !

(फोन रखकर मास्टर तेजी से बाहर भागता है।)

विनोद : क्या बज रहा है ?

दिलीप : ढाई ।

मंजु : जी नहीं, पौने तीन !

(सब तेजी से लिख रहे हैं।)

राकेश : यार, गीता किसने लिखी ?

रीटा : हरे कृष्णा ने !

विनोद : गलत। हरे कृष्णा ने तो महाभारत की 'वार' में गीता कही थी, जिसको लिखा था स्टेनो मिस्टर व्यास ने।

राकेश : थैंक्यू . . . !

दिलीप : यार, चाय बिना मेरा गला सूख गया।

राकेश : गाना नहीं गाना है, यार ! . . झटपट नकल करो।

दिलीप : इस तीसरे सवाल का जवाब किस किताब में है ?

राकेश : नॉवेल्टी में क्या पिक्चर चल रही है ?

विनोद : 'जय बंगला देश !'

दिलीप : वाह, इतना भी नहीं पता ! वह पिक्चर हट गयी . . .

राकेश : हट नहीं गयी, 'बैन' कर दी गयी।

दिलीप : *(किताबें ढूंढ रहा है।)* इस सवाल का जवाब किस 'गाइड' में है ? मास्टर भी न जाने कहाँ . . . . . .

रीटा : डरकर भाग गया।

मंजु : उस बेचारे का 'इंश्योरेंस' खत्म हो गया।

रीटा : बड़ा बहादुर बनता था।

दिलीप : यार, अब रेडियो बंद करो।

राकेश : ना ना ना, बिना रेडियो संगीत के मैं कुछ नहीं लिख सकता।

विनोद : अभी मेरे तीन सवाल बाकी हैं।

दिलीप : महात्मा गांधी का पूरा नाम इस 'गाइड' में दिया ही नहीं है। क्या नाम था पूरा उनका ?

राकेश : पूरा नाम लिखने की कोई जरूरत नहीं !

दिलीप : दैट्स राइट !

(बाहर से मास्टर का प्रवेश। वह अपनी रक्षा में जैसे लोहे का वस्त्र पहने आया है। हाथ में ढाल लिये है। उसे देखकर सभी चिल्ला पड़ते है 'भूत ! भूत !')

मास्टर : मैं भूत नही. . . तुम्हारा वही 'इनविजीलेटर' हूँ !

राकेश : तुम्हारा मुँह किधर है ?

मास्टर : चुपचाप नकल करो ! परीक्षा का वक्त अब खत्म होने को है। जल्दी करो, जल्दी !

राकेश : अभी तो हमारे काफी सवाल बाकी हैं।

मास्टर : तुम लोग नकल करने में लापरवाही करते हो !

विनोद : इस सवाल का जवाब किसी किताब में भी नहीं मिल रहा है. . .यह सवाल हमारे 'कोर्स' के बाहर है।

मास्टर : तुम लोग 'गाइड' और 'कुंजियों' के 'लेटेस्ट एडीशन' नहीं लेकर आये।

दिलीप : हमारे पास सारे 'एडीशंस' हैं।

मास्टर : मेरी लिखी हुई वह किताब है, 'मास्टर गाइड' ?

रीटा : जी हाँ, यह रही!

मास्टर : उसमें देखो, पेज दो सौ चार पर. . . अपने इस सवाल का जवाब !

(वह देखता है और पाकर खुशी-खुशी नकल करने लगता है।)

मास्टर : सावधान. . .जब पाँच मिनट वक्त रह जाएगा, तब मैं घंटी बजाऊँगा। चलो, तेजी से काम करो, मेरे होनहार बच्चो !

राकेश : आपकी घड़ी कहाँ से मिली हुई है ?

मास्टर : आल इंडिया रेडियो से !

रीटा : जी नहीं, रेडियो सीलोन से मिलाइए।

मास्टर : यह नहीं हो सकता। हम में राष्ट्रीय भावना होनी चाहिए !

विनोद : जी नहीं, हमें सिर्फ विद्यार्थी भावना चाहिए !

सभी : छात्र एकता जिंदाबाद !

मास्टर : आर्डर. . . आर्डर. . . बोलो, क्या चाहते हो ?

रीटा : लाइए, आपकी घड़ी रेडियो सीलोन से मिला दूँ. . . लाइए. . . बढ़िए. . . डरते क्यों हैं?

मास्टर : मेरे पास घड़ी कहाँ है ? लल्लू की माँ ने कहा, 'घड़ी बांधकर इम्तहान लेने मत जाओ'।

राकेश : फिर हम आपको खुद बता देगे 'टाइम'।

मास्टर : थैंक्यू, मेरे प्यारे बच्चे. . . वैसे मैं तुम लोगों से कतई नहीं डरता। मेरे ऊपर न अब कोई छुरे-चाकू से वार कर सकता है, न ईंट-पत्थर से . . . मेरे ऊपर कोई तेजाब भी नहीं डाल सकता। तेल छिड़ककर मुझे अब कोई जला भी नहीं सकता . . . मैं सरकारी 'बस' नहीं हूँ !

विनोद : साइलेंस प्लीज !

मास्टर : साइलेंस ! मंजु

सभी : साइलेंस ! राकेश

मास्टर : साइलेंस ! विनोद

(फोन की घंटी बजती है।) दिलीप

मास्टर : हेलो . . . यस सर . . . यस सर ! जी, बहुत अच्छा ! मास्टर

(मास्टर फोन रखकर पॉकेट से घंटी निकालकर बजाता है।)

मास्टर : पांच मिनट वक्त और, सिर्फ पांच मिनट . . . ओनली फाइव मिनिट्स मोर . . . अपनी अपनी कॉपियाँ देखिए . . . अपने-अपने रोल नंबर चेक कीजिए। जल्दी कीजिए ! राकेश मास्टर

दिलीप : अभी मेरे आधे सवालात बाकी हैं। विनोद

विनोद : अभी दो सवाल मुझे नकल करने हैं। दिलीप

राकेश : मुझे अभी एक घंटा वक्त और चाहिए ! राकेश

रीटा : हाय . . . मैने तो हिस्ट्री की नोटबुक से लिटरेचर के सवाल कर डाले। अब क्या होगा? रीटा

मंजु : उसे 'लिटरेचर' समझा जाए। राकेश

सभी : (*एक स्वर*) छात्र एकता ज़िंदाबाद ! मंजु

(मास्टर बाहर भागता है) राकेश

दिलीप : हमें और वक्त चाहिए !. . . रीटा

विनोद : चाय बिना मेरा गला सूख रहा है ! मास्टर

राकेश : तुमने किस पर निबंध लिखा है ? रीटा

दिलीप : जया भादुड़ी पर ! मंजु

विनोद : मैंने लिखा है बबीता पर . . . मास्टर

राकेश : मेरी 'फेवरेट हिरोइन' है मुमताज . . . राकेश

(मास्टर आता है) मास्टर

मास्टर : आर्डर . . . आर्डर . . . तुम लोगों को एक घंटे का वक्त और दिया गया। चलो . . . 'पेपर्स' पूरा करो। अब तो खुश। चलो। विनोद

रीटा : अरे . . . यह तो ठीक तीन बज गए।

मंजु : तीन बज गए . . . मुझे ठीक सवा तीन बजे पिक्चर हॉल पहुँचना है।

राकेश : मैंने भी मैटिनी शो के टिकट खरीदे हैं।

विनोद : मेरी भी एडवांस बुकिंग है।

दिलीप : मेरी भी !

मास्टर : फिर ?

(सारे परीक्षार्थी आपस में सलाह करते हैं)

राकेश : हमारी डिमांड है– हम सबकी बाकी कॉपियाँ आप यहाँ बैठकर पूरी कीजिए।

मास्टर : मेरे पास भी वक्त नहीं। मुझे एक 'गाइड बुक' पूरी करनी है, इम्तहान की हज़ारों कॉपियाँ देखनी हैं।

विनोद : खबरदार, तुम्हारे घर में आग लगा देंगे !

दिलीप : तुझे दिन दहाड़े गायब कर देंगे।

राकेश : चलो, बैठो . . . बैठो।

(मास्टर एक कुर्सी पर बैठता है)

रीटा : चलो, हमारी कॉपियाँ पूरी करो !

राकेश : पहले लड़कों की कॉपियाँ ?

मंजु : जी नहीं, पहले हमारी कॉपियाँ !

राकेश : यू शटअप !

रीटा : यू शटअप !

मास्टर : आर्डर . . आर्डर . . मुझे नकल करने दो, सब पूरा कर दूँगा !

रीटा : अपने मन या दिमाग से एक भी नहीं लिखना।

मंजु : सब नकल होनी चाहिए।

मास्टर : अजी, मेरे पास इतना दिमाग होता तो मैं यही मास्टरी करता ! जाओ, बेफिकर रहो।

राकेश : सावधान, कोई गड़बड़ी नहीं होनी चाहिए !

मास्टर : जाओ, जाओ, पिक्चर का समय हो गया।

विनोद : तुम लिखना शुरू करो ! . . जरा हम देखें तो सही !

(मास्टर नकल करता है)

दिलीप : नहीं, एक-एक लाइन हर कॉपी पर . . .

मास्टर : तुम लोग चाहते क्या हो ?

सभी : पता नहीं !

मास्टर : धमकाते हो !

राकेश : तुम्हें शर्म आनी चाहिए . . तुम्हें चुल्लू भर पानी में डूब मरना चाहिए !

मास्टर : लाओ चुल्लू भर पानी . . मैं डूब जाऊँगा . . लाओ !

(एक कप में पानी आता है। मास्टर अपने बख्तर(सुरक्षा-वस्त्र), सिरस्त्राण (टोप) उतारता है . . . और कप का पानी तेजी से पी जाता है।)

मास्टर : जय हर-हर गंगे !

(जैसे वह पानी में डूब गया, टेबुल के नीचे अदृश्य, सब परेशान।)

राकेश : सॉरी, सर ! अब आप दर्शन दीजिए।

विनोद : आप महान हैं।

दिलीप : हम आप के लिए परेशान हैं।

रीटा : हाय, निकलिए ना।

(दूसरी युवती उन्हें खींचकर बाहर निकालती है)

मास्टर : अच्छा . . बाई-बाई।

सभी : बाई।

सब जाते हैं। मास्टर सबकी कॉपियाँ दौड़ -दौड़कर नकल करके लिख रहा है। ऊपर का लटकता हुआ छुरा हवा में हिल रहा है। परीक्षार्थी एकाएक बाहर से झाँककर देखते हैं।

मास्टर : *(देखकर)* हें हें हें हें !

सभी : हें हें हें हें . . .

पर्दा गिरता है।

□ □ □

2.

पहला

दूसरा

पहला

दूसरा

पहला

दूसरा

पहला

दूसरा

बिल्ली

2. बिल्ली का खेल

(पहला दृश्य खुलते ही तीन लड़के क्रमशः घोड़ा, गधा और बिल्ली लिये मंच पर दिखते हैं। बड़ा लड़का अपने घोड़े के साथ, मंझला अपने गधे के साथ बहुत खुश हैं। दोनों उपहास कर रहे हैं।)

पहला : मेरा घोड़ा कितना शानदार है।

दूसरा : मेरा गधा बोझा ढोने में होशियार है।

पहला : घोड़ा बड़ी बात है। बिल्ली वाहियात है।

दूसरा : हर वक्त म्याऊं ! म्याऊं !

पहला : अपने मालिक को ही खाऊं ! खाऊं !

(हंसते हैं)

मेरा घोड़ा बड़ा कमाऊँ।

दूसरा : मेरा गधा है सीस नवाऊ।

पहला : बिल्ली का तो काम है चोरी।

दूसरा : छोटी, ओछी और छिछोरी।

(छोटा लड़का कुमार अलग उदास बैठा है। बिल्ली अपने मालिक का उदास मुख देखकर दुखी है और उन दोनों भाइयों और जानवरों के मजाक से उसे गुस्सा आता है।)

बिल्ली : कैसा कैसा कैसा ! पड़े पड़े पड़े। होंगे अपने घर के बड़े। माना ये दोनों मुझ से बड़े हैं। पर हैं छोटे तो क्या, हम भी यहाँ खड़े हैं। इनकी हिम्मत देखो, मेरे मालिक का मजाक करने चले हैं। हे घोड़े गधे ! हे उनके मालिक ! मत हो शेखचिल्ली। मैं भी नहीं हूँ ऐसी मामूली बिल्ली। ऐसे मजे चखाऊंगी। बिल्ली चरित्र दिखाऊंगी। *(अपने मालिक से)* हे मेरे मालिक ! हे मेरे कुमार ! छोड़ो उदासी, करो विचार। ला दो मेरे लिए घुंघरू। मैं करूं नाच छम्मक छम्मा, देखें लोग हुम्मक हम्मा।

(इस बीच दोनों भाई और उनके जानवर बिल्ली पर हंसते और उपहास करते रहे हैं।)

कुमार : (*उठता है*) हे तू करेगी नाच ?

बिल्ली : हाँ बिल्कुल साँच !

(कुमार उसके पैरों में घुंघरू बाँधता है। वे दोनों जानवरों सहित उपहास कर रहे हैं। बिल्ली गा-गाकर नाचती है। दर्शकों की भीड़ लग जाती है। उपहास करने वाले आश्चर्यचकित रह जाते हैं।)

गुलाबो खूब झगरिहैं, मलीदा घोरि के पीहैं !
हे हे ! गुलाबो खूब झगरिहैं।
गुलाबो रीन्ही बरी, सिताबो रीन्ही दाल;
गुलाबो के जरिगे बरी सिताबो भई बेहाल।
गुलाबो खूब झगरिहैं, सिताबो खूब झगरिहैं !
हे हे गुलाबो !
गुलाबो खूब झगरिहैं
सिताबो खूब लड़ैइहैं
गुलाबो बनावें रोटी, एक छोटी एक मोटी;
सिताबो बनावें लड्डू, एक छोटा एक बड्डू।
गुलाबो कै जरिगै रोटी, सिताबो भई मोटी।
गुलाबो खूब झगरिहैं, सिताबो खूब लड़ैइहैं. . . .

(बिल्ली के फैले आंचल में लोग खूब पैसे रुपये डालते हैं। दृश्य बदलता है। राजा के दरबार में बिल्ली एक तलवार भेंट करने के लिए आती है।)

मंत्री : राजा राजा ! यह बिल्ली आयी है। भेंट करने तलवार लायी है।

राजा : अच्छा ! ऐसी बिल्ली कहाँ है ?

बिल्ली : जै हो राजन ! बिल्ली यहाँ है।

राजा : बता यह किसकी तलवार है ?

बिल्ली : मेरा बहुत बड़ा सरदार है। खूब कारोबार है। वहाँ सदाबहार है। उसी ने भेंट की आपको यह तलवार है।

(राजा को भेंट देती है।)

राजा : (*प्रसन्न*) वाह कितना सुंदर विचार है। उपहार यह तलवार है। तलवार ही उपहार है।

बिल्ली : राजन, हमारे मालिक को दरसन दीजिए। हम सबका परनाम लीजिए।

राजा : अच्छा अच्छा, कल शाम टहलने जाऊँगा तो उधर जरूर आऊंगा।

बिल्ली : मैं रास्ते में मिलूँगी। मालिक तक खुद ले चलूँगी।

राजा : मुझे खुशी होगी।

बिल्ली : हमें बहुत-बहुत खुशी होगी।

(दृश्य बदलता है। बिल्ली पुकारती है।)

बिल्ली : मालिक मालिक ! मालिक कुमार !

(कुमार आता है)

कुमार : क्या है ?

बिल्ली : तलवार भेंट कर आ रही हूँ।

कुमार : अच्छा!

बिल्ली : राजा को कल लाऊँगी। तुम्हें उनसे मिलाऊँगी।

कुमार : ना ना ना। यह तूने क्या किया ?

बिल्ली : जो करना था वही किया। राजा का विश्वास जिया।

कुमार : अरे अपने पास न कपड़े-लत्ते, न घर-दुआर।

बिल्ली : चिंता क्यों करते कुमार ? सुनो ! कल शाम तुम इस वक्त नदी में नहाना। करूँगी मैं एक लाजवाब बहाना।

कुमार : मुझे बता ना !

बिल्ली : ना ना ना !

कुमार : अच्छा।

बिल्ली : हाँ, बस नहाते रहना। जब मैं पुकारूँ तो बाहर निकलना।

कुमार : ऐसा !

बिल्ली : हाँ ऐसा !

कुमार : वाह मेरी बिल्ली !

बिल्ली : और उड़ावै लोग हमारी खिल्ली !

(दृश्य बदलता है। घोड़े जुते रथ पर राजा टहलने निकले हैं। साथ में राजदरबार

के लोग, नौकर-चाकर सिपाही आदि शामिल हैं। आगे-आगे बिल्ली चल रही है।)

राजा : कहाँ है तेरे मालिक का निवास ?

बिल्ली : बिल्कुल आ गये पास !

राजा : अच्छा, बहुत खूब !

(सब चलते रहते हैं। अचानक बिल्ली चिल्लाती है।)

बिल्ली

राजा

बिल्ली

राजा

बिल्ली

राजा

बिल्ली

राजा

बिल्ली

कुमार

सब

बिल्ली

एक वि

दूसरा

पहला

दूसरा

तीसर

चौथा

पहला

बिल्ली : हाय हाय ! यह क्या हो गया ! मेरा मालिक नदी में गिर गया ! बचाओ बचाओ !

राजा : जाओ, इसके मालिक को बचाओ। उसे नये कपड़े पहनाओ। और सादर मेरे पास लाओ।

(जाते हैं।)

बिल्ली : हाय, भगवान ने बचा लिया ! मैंने अपने मालिक को जो देख लिया !

राजा : वह उधर कहाँ जा रहे थे ?

बिल्ली : हाथ-पैर धोकर आपसे ही मिलने आ रहे थे।

राजा : मिलकर खुशी होगी !

बिल्ली : हमारा धन्य भाग होगा !

राजा : जिसकी बिल्ली ऐसी है, मालिक का कितना अहोभाग होगा ?

बिल्ली : वह आ रहे हैं मेरे मालिक।

(राजसी वस्त्रों में कुमार घोड़े के साथ आता है।)

कुमार : राजा की जय जयकार !

सब : राजा की जय जयकार !

(राजा कुमार से गले मिलकर सादर अपने रथ पर बैठाता है।)

बिल्ली : आप लोग टहलते आइए। मैं आगे मिलूंगी, मिलते मिलाइए।

(बिल्ली चली जाती है। राजा और कुमार एक साथ रथ पर बैठे घूमते हुए जाते हैं। दृश्य बदलता है। तमाम किसान खेत में काम कर रहे होते हैं। बिल्ली नाचती हुई आती है। सारे किसान उसका नाच देखने घिर आते हैं। बिल्ली के नाच से किसान रीझकर।)

एक किसान : हाय बिल्ली नाचे छुम्मक छुम्म।

दूसरा : बोलो बोलो लोगी क्या तुम ?

(नाच-नाचकर बिल्ली और रिझाती है।)

पहला : हाय घुंघुरू बाजे छुनुन छुनुन।

दूसरा : बिल्ली नाचे मुनुन मुनुन।

तीसरा : हाय हाथ भी नाचै, पूंछ भी नाचे।

चौथा : आंखें मतवाली चाल निराली।

पहला : बोलो बोलो क्या इनाम दें ?

दूसरा : जान है हाजिर कौन काम दें ?

(बिल्ली नाचते-नाचते रुकती है।)

बिल्ली : मेरा एक काम करोगे ?

सब : हाँ हाँ, एक नहीं दो करेंगें !

बिल्ली : सच राम कसम !

सब : सच ! राम कसम !

बिल्ली : देखो भाई। अभी इधर से राजा की सवारी आयेगी। राजा पूछे किसकी खेती ? किसकी जमीन ? तुम सब कहना—कुमार की खेती, कुमार की जमीन।

सब : ठीक है यही कहेंगे।

(बिल्ली नाचती हुई चली जाती है। राजा की सवारी आती है।)

सब : राजा की जय जयकार !

राजा : किसकी प्रजा? कौन करतार ?

पहला : हम प्रजा हैं कुमार की।

दूसरा : यह खेती है कुमार की !

राजा : ओ हो !

सब : राजा की जय हो !

राजा : ओ हो ! ओ हो !

सब : कुमार की जय हो ! राजा की जय हो !

(दृश्य बदलता है। मजदूरों का गिरोह एक जगह काम कर रहा है। बिल्ली नाचती हुई आती है।)

सारे मजदूर : *(देखते ही)* हे लो हे लो हे लो !

(बिल्ली उनसे घिरी हुई नाचती-गाती पहेलियाँ-सी पूछती है।)

बिल्ली : ऊजरि घंघरिया हरी ओढ़नियां
ओकर नाचे रतनियां।

सारे मजदूर : (खुशी से मस्त) मूली !

बिल्ली : अन कहों बन कहों
बन माँ बाँधो बोझा

सारे मजदूर

बिल्ली :

सारे मजदूर

बिल्ली :

एक मजदूर

दूसरा :

तीसरा :

चौथा :

बिल्ली :

सब :

बिल्ली :

सब :

बिल्ली :

सब :

बिल्ली :

सब :

बिल्ली :

सब :

हाथी के घुनघुनियाँ बाँधो
छिटक परे हैं राजा।

सारे मजदूर : अरहर का पौधा !

बिल्ली : अगर कगर से बारी रूंधी
बीच मां फुलवारी
मोरे राम का झुमका गिरिगा
दुलहिन है बलिहारी !

सारे मजदूर : आम का बौर !

(बिल्ली मजदूरों को रिझाती हुई नाचती है।)

एक मजदूर : बोलो बोलो !

दूसरा : मुखड़ा खोलो।

तीसरा : हम तुम्हें क्या दें इनाम में ?

चौथा : माल में या रूपये दाम में ?

बिल्ली : मेरा एक काम करोगे ?

सब : यह भी कोई पूछने की बात है !

बिल्ली : राजा अभी आयेगा।

सब : अच्छा।

बिल्ली : एक सवाल पूछेगा।

सब : अच्छा अच्छा !

बिल्ली : तुम हो किसके मजदूर ?
कहना—बिल्ली के मालिक के।

सब : हां हां, बिल्ली के मालिक के !

बिल्ली : पर बिल्ली का मालिक कौन ?

सब : हाँ हाँ भाई, कौन ?

बिल्ली : कुमार।
राजा के साथ ही बैठकर आयेगा।
दूध-मिठाई लायेगा।

सब : कुमार आयेगा।
दूध-मिठाई लायेगा।

(सब नाचने लगते है। बिल्ली चली जाती है। मजदूर फिर अपने काम पर लग जाते है। राजा की सवारी आती है। साथ में कुमार और अन्य लोग हैं। राजा को देखते ही)

बिल्ली :

सब मजदूर : हम करते कुमार के काम, राजा तेरो सुंदर नाम।

जादूगर :

राजा : अच्छा, इतने मजदूर कुमार के !

बिल्ली :

कुमार : आपके आसीरवाद से !

राजा : बहुत खुशी भाई बहुत खुशी। बहुत खुशी भाई बहुत खुशी।

जादूगर :

(राजा कुमार के गले मिलता है। हाथ मिलाता है। दृश्य बदलता है। रास्ते में कुमार और बिल्ली)

बिल्ली :

कुमार : अरे सुनो सुनो, यह क्या कर डाला ?

जादूगर :

बिल्ली : क्या हुआ मालिक ?

बिल्ली :

कुमार : मैं कहाँ का इत्ता बड़ा कुमार कहाँ का मालिक कहाँ का सरदार ?

जादूगर :

बिल्ली : निराशा मिटाओ। बस देखते जाओ।

बिल्ली :

कुमार : न रहने की जगह न खाने को रोटी।
पता चला राजा को तो काटेगा बोटी बोटी !

जादूगर :

बिल्ली :

बिल्ली : *(दर्शकों से)* घबड़ाते नहीं, अपने आप पर विश्वास रखते हैं। हाथ में दम है तभी तो आस रखते हैं। पता है जंगल में एक बार था मुझे मिला एला अलवेला एक सुंदर जादूगर का किला। जादूगर के किले में जाकर अपने करिश्मे दिखाऊंगी। जादूगर से मिलकर किले में गुल खिलाऊंगी। हाँ, नहीं तो बिल्ली किसकी। जो हँसते थे खिल्ली उनकी।

जादूगर :

(दृश्य बदलता है। जादूगर का किला। चारों तरफ सिपाही तैनात हैं। तरह-तरह के जीव-जंतु घूम रहे हैं। अजब दृश्य है जादूगर के किले में उसका। बिल्ली आती है। दरबान सिपाही उसे फाटक पर ही रोकता है।)

सिपाही : ऐ बिल्ली की जात ! कहाँ चली जात ?

बिल्ली : कृपा करो मुझ पर, मत दो कोई सजा। मैं गरीब प्रानी हूँ, जादूगर की प्रजा। पहले से ही बहुत सतायी हूँ। जादूगर के दरसनों के लिए आई हूँ।

जादूगर :

बिल्ली :

सिपाही : अच्छा अच्छा, जा

जादूगर :

बिल्ली : धन्यवाद रवा।

बिल्ली :

(आगे बढ़ती है। जादूगर के पास पहुँचती है। जादूगर का साम्राज्य देखकर आश्चर्यचकित हो जाती है। सेवकों में कोई उसका पैर दबा रहा है, कोई चमर डुला रहा है)

जादूगर :

बिल्ली :

बिल्ली : जै जै जै जादूगर महान। है प्रसिद्ध तू जग जहान। अजब निराली तेरी शान। बहुत दूर से आयी हूँ। पानफूल ले आयी हूँ। स्वीकार करो मेरा उपहार। दर्शन कर हो गयी निहार।

(जादूगर बिल्ली के हाथ से फूल लेकर खुश होता है।)

जादूगर : बोलो बोलो क्या चाहोगी ?

बिल्ली : मुझे दिखाओ जादू का खेल।
कुछ ऐसा जो हो अनमेल।

जादूगर : लो ! छू मंतर छू मंतर छू।

(अपने सारे सेवकों को जादू से बंदर, चिड़िया आदि में बदल देता है।)

बिल्ली : वाह वाह ! जैसा सुना था वैसा पाया। अजब तुम्हारी जादू माया।

जादूगर : *(घमंड से)* हा आ हा, आ हा, आ हा।

बिल्ली : हि ही हि ही हि ही हि ही ही।

जादूगर : बोलो और क्या देखना चाहोगी ?

बिल्ली : बुरा न मानना, एक बात पूछूं ?

जादूगर : हां हां, हां हां हां हां हां !

बिल्ली : जादू क्या दूसरों पर ही करते,
ऐसा तो सब जादूगर करते।
क्या ऐसा जादूगर कर सकते
अपने को शेर बना सकते ?

जादूगर : हां हां हां हां हां हां !
छू मंतर छू मंतर छां।

(जादूगर शेर बनकर दहाड़ने लगता है। बिल्ली डरने और रोने लगती है। जादूगर फिर अपनी असली हालत में लौट आता है। पर बिल्ली अब तक डर के मारे काँप रही है।)

जादूगर : अरे अरे, अब क्यों डरती ?

बिल्ली : शेर की सूरत से मैं मरती !

जादूगर : अरे रे रे तुझे हो क्या गया ?

बिल्ली : डर से दिल का दौरा पड़ गया।

जादूगर : इस दर्द की दवा क्या है ?

बिल्ली : हाय मैं मरी ! हाय मैं गिरी ! हाय मैं डरी ! हाय मैं मरी !

जादूगर : बोलो, मैं तुम्हारे लिए कुछ भी ला सकता हूँ। कुछ भी बन सकता हूँ।

बिल्ली : कुछ भी बन सकते हो ?

जादूगर : हाँ हाँ कुछ भी।

बिल्ली : नहीं नहीं हे महान जादूगर। मै चली जाती हूँ चुपचाप अपने घर। मैं तुम्हें और कष्ट नहीं दूंगी। जो कुछ हुआ है मै सह लूंगी।

जादूगर : नहीं नहीं मेरा और खेल देखो, तबीयत बहल जायेगी।

बिल्ली : कुछ डरावना नहीं, मैं हूँ बहुत शांत, नहीं तो मेरी आखिरी साँस निकल जायेगी।

जादूगर : अच्छा अच्छा, मैं छोटी सी चिड़िया बन जाऊँ ?

बिल्ली : (*प्यार से*) नही ! चिड़िया उड़ जाती है !

जादूगर : अच्छा मक्खी बन जाऊं ?

बिल्ली : नहीं, मक्खी गंदी होती है !

जादूगर : अच्छा बिल्ली बन जाऊं ?

बिल्ली : नहीं बिल्ली गुर्राती है। जीव-जंतु को खा जाती है। मुझको ये सब नहीं पसंद। मैं चाहूँ सबका आनंद।

जादूगर : अच्छा तो मैं चूहा बन जाऊँ ?

बिल्ली : नहीं, तुम चूहा नहीं बन सकते। चूहा बनना बड़ा कठिन है।

जादूगर : मैं बन सकता हूँ।

बिल्ली : बड़ा असंभव !

जादूगर : छू मंतर छू मंतर छू।
चूहा बोले चूं चूं चूं !

(जादूगर चूहा बन जाता है। बिल्ली दौड़कर चूहे को खा लेती है। सारे सिपाही नौकर-चाकर आश्चर्य से देखते रह जाते हैं।)

बिल्ली : सुनो सुनो सुनो ! सारे आ जाओ पास। जादूगर गया मेरे पेट में। यह सब मिल गया मुझे भेंट में।

(जादूगर के सेवकों में आश्चर्यपूर्ण बातचीत। संकेत व्यापार। उनके संकेतों से पता चलता है कि वे बिल्ली की ताकत को सहर्ष स्वीकार करते हैं और जादूगर से मुक्ति की सांस लेते हैं।)

बिल्ली : सुनो सुनो सुनो ! अच्छे से अच्छा खाना व्यंजन मिठाई तैयार करो। अच्छे से अच्छा संगीत तैयार करो। इस जगह को और सजाओ। खुद सजो और पूरे किले को सजाओ।

सब : जो आज्ञा, महाराज !

बिल्ली : मैं जाती हूँ। और इस किले के असली राजा को ले आती हूँ।

(जाती है। सब तैयारी में लग जाते हैं। दौड़-धूप होती रहती है। संगीत बजने लगता है। राजा की सवारी आती है। साथ में है राजकुमारी, कुमार और लोग, और बिल्ली।)

राजा : ओह तुम्हारा इतना बड़ा शानदार किला। ऐसा राजकुमार मुझे कहीं नहीं मिला। बिल्ली!

बिल्ली : आज्ञा महाराज !

राजा : बिल्ली तुझे धन्यवाद है अनेक अनेक बार। तूने मिलाया मुझे इतना अच्छा राजकुमार। धन दौलत किला शानदार ! मुझे भी देना है एक बड़ा उपहार !

बिल्ली : आप राजा, यह मेरे मालिक, आप दोनों जानें। आप दोनों खुश रहें, मुझे सिर्फ एक बिल्ली मानें।

राजा : अपनी राजकुमारी को राजकुमार के हाथ देता हूँ। इस शादी में अपनी आधी दौलत साथ देता हूँ।

बिल्ली : खाओ-पियो जश्न मनाओ ! मेरे मालिक की शादी है, नाचो गाओ !

(खाना-पीना, नाचना-गाना शुरू होता है। मंच के किनारे, किसान के वही दोनों लड़के अपने घोड़े और गधे के साथ उदास दिखते हैं।)

बिल्ली : *(दर्शकों से)* कैसा कैसा कैसा ! पड़े पड़े पड़े। होंगे अपने घर के बड़े ! अब बोलो, कहाँ रहा तेरा घोड़ा, कहाँ है तेरा गधा ? छोटी बातों में न फंसो। छोटों पर ऐसे न हँसो ! असली चीज है बुद्धि और आशा। मैं थी छोटी पर मानी नहीं निराशा। *(पास जाती है)* ऐ मत हो उदास। हो सब मेरे मेहमान। मेरे मालिक की शादी है आओ। नाचो-गाओ, खुशियाँ मनाओ !

(उन्हें लेकर बिल्ली उस नाच-गाने में मिल जाती है।

(पर्दा गिरता है।)

□ □ □

3. राजा लंबोदर

पात्र : **पांच-पांच बच्चों की दो अलग टोलियां, छः लड़कियां, काला कौआ, एक नाक, एक कान, एक आंख, मंत्री–विदूषक, राजा लंबोदर**

(खुला रंगपीठ। पृष्ठभूमि में संगीत उभरना। विदूषक का प्रवेश।)

विदूषक : मोती का रंग भाई मोती का रंग।
खेल-खेल में उड़िगै पतंग।।
नौ सै मोती नौ सै रंग।
मोती के घर से निकरी पतंग।।

(केवल संगीत। विदूषक का अभिनटन। कुछ ही क्षणों में बायीं ओर से मोती रंग की वेषभूषा में बच्चों की पहली टोली का प्रवेश।)

बच्चे : मोती का रंग भाई मोती का रंग।
मेरी पतंग भाई मेरी पंतग।।
जितने मोती उतने रंग।
मोती का रंग भाई मोती का रंग।।

(केवल संगीत। संगीत पर अभिनटन। दूसरी ओर से विदूषक का मूंगे के रंग की वेशभूषाओं वाली लड़कियों की टोली ले आना।)

लड़कियां : मूंगे का रंग रंग रंग रंग
रंग रंग।
मूंगे का रंग रंग
आई आई आई आई।
आई आई आई आई
आई आई आई आई।।

(संगीत केवल। लड़कियों का अभिनटन।)

विदूषक : भागो भागो आंधी आई।

(हीरे रंग की वेशभूषा मे बच्चों की दूसरी टोली का प्रवेश।)

बच्चे : अपना तो हीरे का रंग।
सबकी काटें हम पतंग।

विदूषक : धंग धंग भाई धंग धंग।

बच्चे : हम सब में हैं बेशकीमती।
हटो हटो जी मूंगा-मोती

पहली टोली: वाह। ये पंक्ति हमारी
हम पहले आए

बच्चे : जी नहीं, हम पहले आए
तुम थे कहां ?
इन्हें कहो जाएं वहां।

लड़कियां : हमें क्या कहा ?

बच्चे : हमने क्या कहा ?

एक लड़की : मैंने सुना।
तूने दी गाली।।

एक बच्चा : कान से सुना ?

एक लड़की : और नहीं तो।

बच्चे : और नहीं तो
और नहीं तो
और नहीं तो
और नहीं तो।

(लड़की का नाराज होकर जाने लगना। विदूषक का रोकना।)

विदूषक : अरे अरे भाई। अरे अरे भाई।
मोती मूंगा हीरा।
चलो त्रिभुज बनो
चलो त्रिभुज बनो
चलो त्रिभुज बनो।
अरे लड़ो नहीं। अरे लड़ो नहीं
ऐसे पै ऐसो खड़ो नहीं।
अरे अरे भाई
अरे अरे भाई . . . ।

लड़की : सुना सुना अपने कानों से।

लड़का : तेरा कान, हाथी का कान।

लड़की : तू बहरा है। विदूषक

लड़का : तेरा कान हाथी का कान।

(संगीत)

बच्चे : तेरा कान हाथी का कान।
जिसने कभी सुना नहीं गान। कौआ
तेरा कान है
तेरा कान है
तेरा कान है छछा छछूंदर।
तेरा कान है खों खों बंदर।।
अंदर बंदर। कान छछूंदर।
एक कान जा गिरा समुंदर।।

विदूषक : एक कान है जिसके पास। एक
काला कौआ डाले घास।।

(काले कौए का प्रवेश। लड़की का गुस्से में जाना। लड़कियों में क्रोध।) दूसरा

कौआ : खों खों खों खों
खों खों खों खों। विदूषक
क्यों करते सब चिल्लपों

लड़कियां : काला कौआ मारो मारो। कौआ
काला कौआ मारो मारो।।

(अभिनय) विदूषक

कौआ : क्यों ? तेरो का बिगारो ? कौआ

लड़ांकेयां : यहां क्यों आए ?

कौआ : यही देखने
कान के कच्चे
होते बच्चे।
बिना कहे सुन लेते बच्चे। कौआ
वे होते हैं कान के कच्चे।।

लड़कियां : मारो मारो काला कौआ। विदूषक
मारो मारो काला कौआ।।

(लड़कियों के साथ कौए का प्रस्थान। बच्चों की दोनों टोलियां आमने सामने कौआ
फ्रेंच क्रिकेट खेलती हुई।)

विदूषक : फ्रैंच क्रिकेट भाई फ्रैंच क्रिकेट।
दोनों टीमें बड़ी विकट।।
बड़ी विकट भाई बड़ी विकट।
दोनों खेलें फ्रैंच क्रिकेट।।

(कौए का प्रवेश)

कौआ : *(खेल देखकर)* वाह भाई वाह।
वाह भाई वाह।।
मोती कहै मैं हूं शाह।
मूंगा कहे मैं बादशाह।।

(खेल खेल में एक टोली की बाल दूसरी टोली के एक बच्चे की नाक में, तथा दूसरी टोली की बाल पहली टोली के एक बच्चे की एक आंख में लगना। आपस में संघर्ष का दृश्य।)

एक : हाय, मेरी नाक।
हाय, मेरी नाक।।

दूसरा : हाय मेरी आंख। हाय मेरी आंख।।

(सब बच्चों का झगड़ते लड़ते हुए प्रस्थान।)

विदूषक : हे हे हे हे हे
अब तू इधर क्यूं खड़ा ?

कौआ : काला कौआ तुझ से बड़ा।
बोल, तू यहां क्यों खड़ा ?

विदूषक : कौआ होता एक आंख का काना

कौआ : माना, माना माना।।
पर तू ऐसे राजा का मंत्री
जिस के केवल पेट।
जैसे लाल किले का गेट।

(विदूषक का कौए का पकड़ने का प्रयत्न। कौआ विदूषक की पकड़ से बाहर।)

कौआ : तेरे राजा के कान नहीं।

विदूषक : चुप चुप चुप चुप
चुप चुप चुप चुप।

कौआ : तेरे राजा के नाक नहीं

विदूषक : चुप भाई चुप।
चुप भाई चुप।

कौआ : तेरे राजा के आंख नहीं।

विदूषक : अब मत बोल हाथ जोड़ता
हाथ जोड़ता
कान पकड़ता।
पैर पकड़ता।।

(कौए की हँसी। किलकारियां विदूषक का भयभीत होना।)

कौआ : राजा को पता है
एक देश में कितने देश ?

विदूषक : कितने देश ?

कौआ : एक देश नाकों वाला।

विदूषक : सिर्फ नाक और कुछ नहीं ?

कौआ : एक देश कान का।

विदूषक : अच्छा।

कौआ : एक देश सिर्फ एक आंख का।

विदूषक : अरे।

कौआ : चलो, चलो, दिखा लाऊं।
आऊं माऊं
खाऊं खाऊं
माऊं माऊं।

(संगीत उभरता है। विदूषक का भयभीत भागना। कौआ का नाक देश में पहुंचना। नाक देश। एक नाक के अधीन कई नाक।)

एक नाक : ना ना ना ना नाक।
छीं छीं छीं छीं छीं।

सब नाक : री री री री रारी।।
मेरी नाक दुनिया से न्यारी।।

एक नाक : एक नाक मैंने मांग लिया।
चढ़े घोड़े असवार किया।।

सब ना
एक ना
सब ना
एक नाक
सब नाक
एक कान
सब कान
एक कान
सब कान :
कौआ :
सब कान :
कौआ :

(अभिनटन।)

चल मेरे घोड़े खुट्टर खूं

सब नाक : खुट्टर खूं भाई खुट्टर खूं

एक नाक : सब को मारो दूलत्ती।।

सब नाक : दुलती भाई दूलत्ती।

(कौए का हंसना)

एक नाक : ऐं। छीं छीं छीं छीं छीं
कौए की दुर्गंध बड़ी।

सब नाक : छीं छीं छीं छीं छीं छीं छीं।

(कौए को पकड़ने मारने की कोशिश, बचकर कौए का भागना। भागकर कान के देश में पहुँचना।)

एक कान : मैंने सुना दिल्ली के बाजार में
किसी ने मुझे मारा है।

सब कान : मैंने सुना सुना सुना
सुना सुना।
किसी ने मुझे मारा है।।

एक कान : मैंने सुना पानी में है आग लगी।
जलाने वाला आया है।।

सब कान : मैंने सुना सुना सुना
सुना सुना।
जलाने वाला आया है।।

कौआ : खों खों खों खों
खों खों
खों खों
आंख नहीं तो का देखोगे ?
नाक नहीं तो का सूंघोगे ?
खों खों, खों खों, खों खों।

सब कान : क्या कहा भाई क्या कहा ?

कौआ : जो सुना सो वो ही सुना।

(कौए का हंसते हुए जाना। सारे कान वही गा रहे हैं।)

मैंने सुना दिल्ली के बाजार में
किसी ने मुझे मारा है।
दिल्ली से एक बिल्ली आई
बिल्ली के घर चूहा आया।
चूहे ने बिल्ली मारा है।।
मैंने सुना दिल्ली के बाजार में
चूहे ने बिल्ली मारा है।।

(कौए का एक आंख के देश में पहुँचना)

एक आंख : मैंने देखा तूने देखा
क्या देखा उसने क्या देखा
देखा देखा पर क्या देखा ?

सब एक-एक आंखें : *(परस्पर)* देखा देखा मैंने देखा।।
तूने देखा तो क्या देखा।।
क्या देखा जो देखा मैंने ?
देखा है पर जाना भी है ?

कौआ : एक काम नहीं धंधा।
एक आंख का अंधा।।
हां, कान नहीं तो सुनेंगे क्या ?
नाक नहीं तो गुनेंगे क्या ?

एक आंख : ये काला काला क्या है ?

सब : ये काला काला क्या है ?

कौआ : जब कान नहीं तो सुनेंगे क्या ?

(कौए का अभिनटन)

जब कान नहीं तो सुनोगे क्या ?
इन्हें दीखता सब काला काला काला
अरे मैं हूं कौआ।
राजा का नौआ।
देखो, कुछ नहीं सुना।

(नकल)

कौआ : आंख हर आंख से लड़ी रहती है।
आंख निगाहों में गड़ी रहती है।।

बिना सुने देखना बहुत मुश्किल है।
सूंघने के लिए नाक खड़ी रहती है।

(एक ओर से नाकों का प्रवेश)

कौआ : भागो भागो भागो।
नाक सूंघती आई नाके।
नाक सूंघती आई नाके
काके कांके कांके कांके।

(दूसरी ओर से कानों का आना)

कौआ : भागो भागो कहां आ गए।
यहां खड़ी हैं अंधी आंखे
बिना नाक के
बिना कान के।

(दौड़कर विदूषक का आना)

विदूषक : भागो भागो।
भागो भागो।
कान खड़े हैं बिना आंख के

कौआ : खों खों खों।

विदूषक : आंख उठी है बिना नाक के ।

कौआ : खों खों खों भाई
खों खों खों।

विदूषक : नाक बढ़ी है बिना आंख के।

कौआ : खों खों खों भाई
खों खों खों।

(विदूषक और कौए के पीछे सबका भागना। भागते-भागते सब थककर अलग-अलग बैठ जाते हैं। दृश्य में फिलहाल विदूषक और कौआ नहीं हैं। संगीत। कौआ एक डंडे में अंगूर का गुच्छा लटकाए क्रमशः आंख, नाक और कान के पास ले जाता है। तीनों इन्द्रियों की अलग-अलग प्रतिक्रिया। तीनों इन्द्रियां स्वतंत्र नहीं, अकेली हैं। तीनों अंगूर के लिए आपस में लड़ रही हैं। पर तीनों असफल हैं। कौआ एक लौकी ले आता है। उस पर भी वही शोरगुल। झगड़ा-लड़ाई संगीत। दौड़ते हुए विदूषक का प्रवेश।)

विदूषक : अक्कड़-बक्कड़।

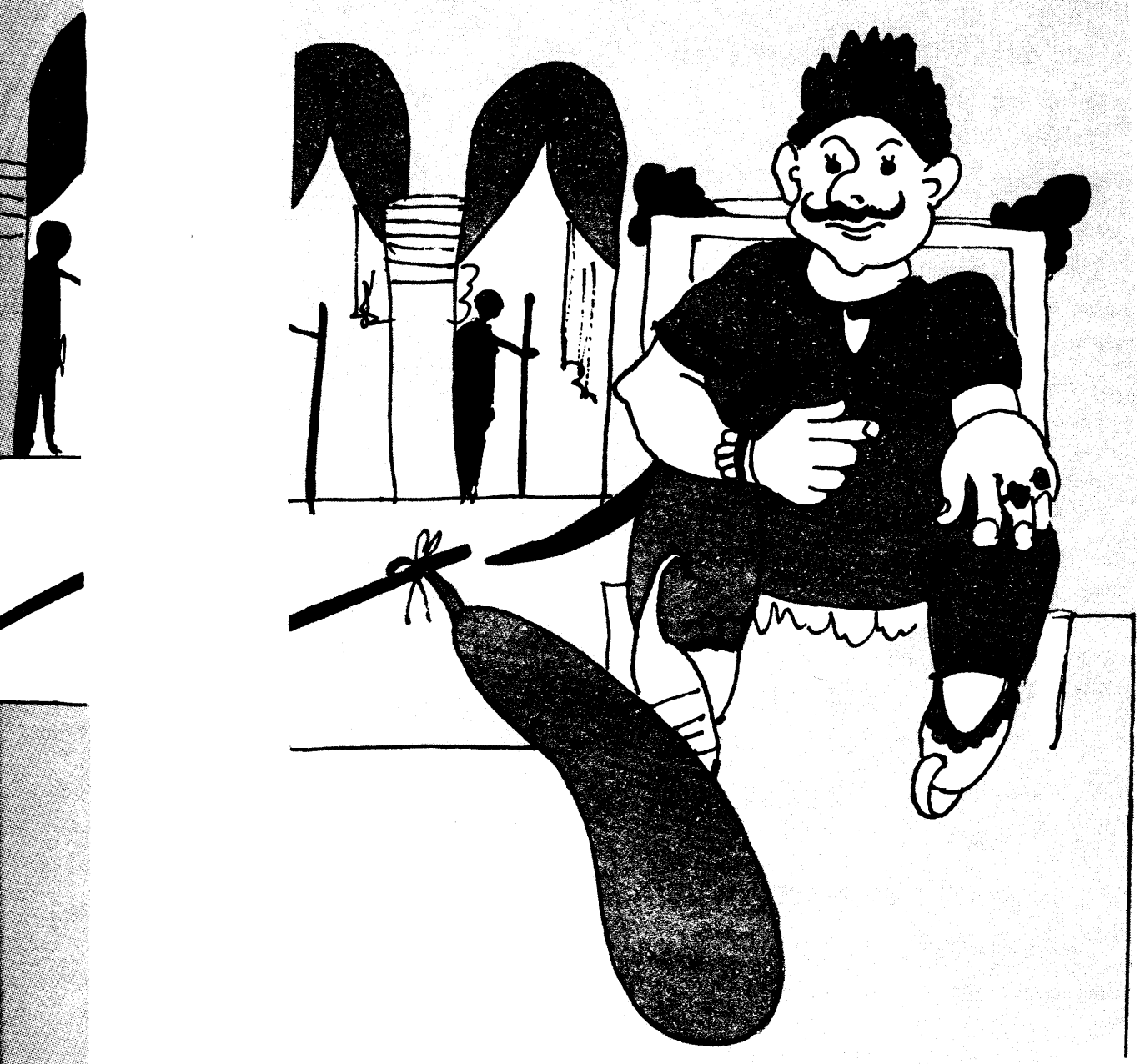

मत कर झग्गड़।

कौआ : तू कहां था बांधे पग्गड़ ?

विदूषक : अपने राजा लंबोदर को
इनके झगड़े दिखाना चाहता हूं।
तू अकेला बेऔकात है
चे बताना चाहता हूं।

कौआ : तीनों को लट्ठ दे दूं।
फिर देखूं तमाशा।

(कौआ कान, नाक और आँख को लट्ठ थमाता है)

विदूषक : कान जू है कान जू।
तेरो मजाक उड़ावै आंख जू।

कान : ऐसा। ऐसा।

विदूषक : आंख जू है आंखजू।
तेरो मजाक उड़ावै कान जू।

आंख : क्यों रे कान बेइमान।
तू इतना बड़ा शैतान।।

कान : क्यों री एक आंख की अंधी।
तू कितनी गंदी गंदी गंदी।।

(दोनों में लट्ठबाजी। विदूषक उन्हें रोककर)

विदूषक : अरे रुको रुको रुक भी जाओ।
ये जो नाकजू है न।
इनकी भी सुनते जाओ।
तुम दोनों के बारे में कह रही थी
तुम दोनों से बदबू आवै
ये छी : छी : छी : छी : कर रही थी।

(तीनों की परस्पर लड़ाई। कौआ बहुत खुश)

विदूषक : कौआ रे भाई कौआ।

कौआ : हां सरकार रउंआ।

विदूषक : ले चलो सबको राजा लंबोदर के पास।

(कौए का प्रस्थान)

कान : कोतर कोतर कोतर।
कौन राजा लंबोदर ?

विदूषक : अरे वही लंबा पेट।
जैसे लाल किले का गेट।।
जिसके नाक नहीं
कान नहीं।
आंख नहीं।
सिर्फ लम्बा पेट
जैसे लाल किले का गेट।

कान : ऐं, ये मैं का सुनता

आंख

नाक

विदूष

विदूषक

राजा

विदूषक

राजा के कान नहीं
तो प्रजा की बात कैइसे सुनता।

आंख : आंख नहीं तो न्याय कैसे करता ?

नाक : नाक नहीं तो खाता क्या ?

(संगीत)

विदूषक : चलो देखन चलें राजा नगरी।।
राजा लंबोदर के नाक नहीं कान नहीं
चलो देखन चलें राजा नगरी।।
राजा लंबोदर के कान नहीं आंख नहीं
चलो देखन चलें राजानगरी।।

(सबका जाना / संगीत / राजा का दरबार / कौआ इस संगीत पर दरबार में नृत्य कर रहा है)

कांव कांव कांव कांव
राजा के दो पांव।
कांव कांव कांव कांव।।
राजा के कान नहीं
राजा बड़ा सुंदर है।
राजा के नाक नहीं
राजा बड़ा सुंदर है।
राजा के आंख नहीं
राजा बड़ा सुंदर है।
खांव खांव खांव खांव
राजा बड़ा सुंदर है।
कांव कांव कांव कांव।।

(विदूषक के साथ नाक, आंख और कान का दरबार में प्रवेश)

विदूषक : जै जै जै राजा महान।
आए हैं दरबार में
नाक आंख औ कान।।

राजा : क्या बोला ? क्या बोला ?

विदूषक : कान है नहीं
इसे कैसे सुनाऊं ?
आंख है नहीं

इसे कैसे बताऊं।
नाक है नहीं
इसे कैसे सुंघाऊं।

राजा : ये क्या बक रहा है ? कौआ

कौआ : आपके रूप की तारीफ़ कर रहा है।

राजा : ना ना ना ना ना ना। राजा
मुझे चाहिए खाना खाना खाना।

कौआ : नाक नहीं तो कुछ भी खिलाओ।
कुछ भी खिलाओ कुछ भी खिलाओ।

(डंडे में लटकाये विदूषक पड़ी हुई लौकी ले आकर राजा के मुंह के पास ले आता है)

नाक : छी छी छी छी छी राजा
लौकी सड़ी है राजाजी।

(राजा नाक को ही खाने दौड़ता है। नाक का भागना)

कान : राजा की भूख खाने आ रही है।
राजा के पेट से आवाजें आ रही हैं

(भेड़, बकरी, मुर्गा की आवाजें। राजा खाने के लिए दौड़ रहा है। राजा विदूषक की पगड़ी, टोपी, डंडा खाना चाहता है)

विदूषक : अरे मेरी टोपी
अरे मेरा जूता।
अरे मेरा डंडा
अरे मेरा कुर्ता।

(संघर्ष। विदूषक का राजा के मुख पर नाक लगाने का प्रयत्न। तीनों इन्द्रियां परस्पर)

आंख : अलग अलग हम सब खतरे में देख रही हूं।

नाक : सूंघ रही हूं खतरा।

कान : सुन रहा खतरे की आवाज।

आंख : तो ध्यान से सुनो।
मुंह को चाहिए खूराक खूराक खूराक।
खूराक भला है या बुरा
उसे सूंघने के लिए चाहिए नाक नाक नाक।

नाक औ मुंह को चाहिए आंख
औ इन्हें चाहिए कान।

(संगीत।)

कौआ : सुनो सुनो सुनो।
राजा कुछ कहने जा रहे हैं।

राजा : आवो आवों आवो।।
मेरे मुंह पै नाक लगाओ।।
नाक के ऊपर आंख बिठाओ।
दाएं बाएं कान लगाओ।।
मुझे पशु से मानुस बनाओ
आवो आवो आवो।।

(राजा के मुख पर तीनों इन्द्रियां।)

राजा : अरे अरे। ये मैं क्या देख रहा ?
ये मैं क्या सुन रहा।
ये मैं क्या गुन रहा।
ये खुशबू कहां से आ रही।

(संगीत। सबका नृत्य।)

वो कान क्या सुनेगा
जब तक आंख नहीं।
जब तक आंख नहीं
जब तक आंख नहीं
वो कान क्या सुनेगा
जब तक आंख नहीं।
वो आंख क्या देखेगी
जब तक नाक नहीं।
वो नाक क्या सूंघेगी
वो आंख क्या देखेगी
वो कान क्या सुनेगा
जो सब में मेल नहीं।
मेल नहीं तालमेल नहीं
तब तक खेल नहीं।

(. . . . . पर्दा)

□ □ □